Navchetana Homilies

April 10, 2020

Gen 22:1-19

Is 52:13-53: 9

Rom 5:6-16

Part I Lk 22:63-23:12+ Mt 27:19 + Lk 23:13-23 + Mt 27:24-25 + Lk 23:24-45 + Mt 27:51-54 + Jn 19:23-30; **Part II** Jn 19:31-42

पवित्र शुक्रवार

रोम की एक सुप्रसिद्ध कहानी है *"Qua Vadis"* – पेत्रुस अपनी मृत्यु को अपनाने से पहले रोम छोड़ देना चाहता था। और वह दबेपांव फाटक की ओर जा रहा था। तभी उसने देखा एक जान–पहचाना सा आदमी उसकी ओर आ रहा है। जैसे ही वह पास आये पैत्रुस ने उनके पैर पड़कर उनका अभिवादन किया और पूछा– "आप कहाँ जा रहे हैं? Latin भाषा में *Qua Vadis?* उन्होंने जवाब दिया– "मैं फिर से क्रूस पर मरने जा रहा हूँ।" यह सुनकर पैत्रुस को अपनी गलती का अहसास हुआ और उसने कहा– "गुरूवर मुझे क्षमा करें मैं आपके पदचिन्हों पर चलने को तैयार हूँ। यह कहकर वह रोम वापस लौट गया। आज भी येसु हमारे लिए क्रूस पर मर रहे हैं। (योहन 10:10) हमें प्रचूर मात्रा में जीवन प्रदान करने आये प्रभु येसु ख्रिस्त का हम स्मरण करते हैं आज इस पवित्र शुक्रवार में।

जहाँ दुनिया में हम दुःख सहने वालों को नालायक समझते हैं। वहीं उन्होंने ईश्वर के पुत्र होने के बावजूद एक साधारण मनुष्य बनकर, क्रूस पर मृत्यु को अपनाकर दुःख एवं दुःखभोग को मुक्ति का प्रतीक बनाया। येसू ने अपने शिष्यों को यही संदेश दिया था– "जो अपना जीवन सुरक्षित करना चाहता है वह उसे खो देगा।"

मध्यप्रदेश के सागर शहर के तालाब के बारे में एक लोककथा प्रचलित है जिसे डॉ. बलभद्र तिवारी ने 'बुन्देली लोककथा' शीर्षक पुस्तक में संकलित किया है। इस तालाब के बारे में यह कहा जाता है कि उसे लाखा नाम के एक बंजारे ने खुदवाया था। लाखा एक अत्यंत जन–कल्याणी पुरूष था। उसके कबीले में सैकड़ों पुरूष और स्त्रियाँ रहती थीं। वह कुशल व्यापारी था। उसके पास बहुत सारा सोना था। लाखा इस चलती फिरती दुनिया (कबीले) का सम्राट था। एक बात और लाखा में अच्छी थी। जिस भी गाँव में कुआँ नहीं होता वह अपने आदमियों से थोड़े ही समय में कुआँ खुदवा देता था। जहाँ धर्मशाला नहीं होती वहाँ धर्मशाला बनवा देता था। लाखा की दोस्ती गढ़पहरा (पुराना सागर) के राजा से थी। एक बार गढ़पहरा के राजा को भोपाल रियासत के नवाब ने युद्ध लड़ने की चुनौती दे दी। गढ़पहरा के राजा ने नवाब की चुनौती स्वीकार कर ली और उससे लड़ने चल दिये। अपने नगर की सारी व्यवस्था की जिम्मेदारी उन्होंने अपने सभासदों और लाखा के ऊपर छोड़ दी। लाखा ने अपने मित्र की मदद भी की पर उस साल अनावृष्टि हो गई। लाखा के आदमियों ने पूरे जोश–खरोश से तालाब खोदना शुरू कर दिया और सेना के बचे लोग किला बनाने में लग गये। पर तालाब ज्यों–ज्यों गहरा होता

त्यों–त्यों उसका पानी चूकता जा रहा था। लाखा हैरान था कि आज तक उसने जिस काम में हाथ डाला वह आसानी से पूर्ण हो गया, फिर तालाब में पानी क्यों नहीं ठहर पा रहा है? इसी चिन्ता में वे कई दिन–रात पहाड़ियों में घूमता रहा। एक दिन आधी रात को दूर कहीं पर कोई व्यक्ति मल्हार राग में गीत गा रहा था। जिधर से आवाज आ रही थी उधर ही लाखा बढ़ता गया। पास पहुँचने पर उसे एक अजनबी मिला जो विचित्र वेश–भूषा धारण किये था। लाखा ने उससे इतनी रात में मल्हार गाने का कारण पूछा तो उसने जवाब दिया "मैं गंधर्व हूँ।" जब मैं अति प्रसन्न होता हूँ तो मल्हार राग में गाता हूँ। आज मैं अति प्रसन्न हूँ क्योंकि इस धरती का भाग्य जाग गया है। सदियों से इसकी कोख में अन्न नहीं उपजा था। ठग–विण्डारों ने यहाँ कई हत्याएँ की है अब ऐसा नहीं होगा, इसलिए मैं गा रहा हूँ। लाखा ने उसे अपना परिचय देते हुए कहा– "मैं लाखा हूँ, मैं तालाब खुदवाने का कार्य कर रहा हूँ। पर एक अड़चन है, इस तालाब में पानी नहीं ठहरता है।" गंधर्व ने कहा– "पानी ठहरेगा कहाँ से? इस भूमि में बंजारों ने वरूणवंशियों की हत्याएँ की है। यदि आप वरूणवंशियों को यहाँ बसाएँ और अपने बड़े बेटे और बहू को सोने के हिंडोला में बैठाकर यहाँ लायें और फिर यहीं पर उनकी बलि दे दें तो यह अभिषाप दूर हो सकता है।"

लाखा सन्नाटे में आ गया। वह दोनों उसे अपनी जान से ज्यादा प्यारे थे। पर सैकड़ों आदमियों के भरण–पोषण की समस्या भी उसके सामने थी। अनावृष्टि होने से लोग भूखे मरने लगे थे।

उसने अपने हृदय को पक्का किया और अभिशप्त धरती को पाप मुक्त करने का संकल्प किया। उसने सोने का हिंडोला बनवाया, उसमें अपने बड़े लड़के और बहू को बैठा कर लाया और फिर उनकी बलि दे दी। उसी रात तालाब को चारों दिशाओं की जलधाराओं ने भर दिया। ज्यों–ज्यों तालाब में जल भरता गया, मल्हार की रागिनी तेज होती गई।

मानव अवतार से ईश्वर इनसान के दर्द और पीड़ा का सहभागी बना है। जनता के लिए कुर्बानियाँ देने वाले नेता, अपने बच्चों के लिए मिट जाने वाले माता–पिता, अपने से छोटे भाई–बहनों के लिए अपनी सुविधाऐं गवाने वाले बड़े भाई–बहन यह सब येसु के क्रूस–रास्ते के सहभगी बन जाते हैं।

Second World War के समय Holland के एक विश्वविद्यालय के President थे फादर टैटस ब्रडस्मा। नासी के सिपाहीयों ने उन्हें पकड़कर कॉन्सेंट्रेशन कैंप में बन्द कर दिया। एक कुत्ते के घर में फादर को बन्दी बनाकर रखा गया और जब भी कोई उस कुत्ते के घर के सामने से निकले उन्हें कुत्ते की तरह भौंकना था। जैसे–जैसे दिन बीतते गये उनकी पीड़ाये बड़ती गयी और वे उस कुत्ते के कमरे में ही मर गये।

उस कमरे से मिली एक किताब में उन्होंने लिखा था– "येसु ने मेरे लिये मुझसे ज्यादा पीड़ायें सही हैं, यही बात मुझे इस दुःखभोग में भी शाक्ति प्रदान करती हैं।"

हम सबके मन में एक प्रश्न उठता है। कि एक धर्मी व्यक्ति को इतना दुःख क्यों सहना पड़ता है?

पुराने विधान का धर्मी व्यक्ति योब भी ईश्वर से यही प्रश्न करता है– "मेरे साथ ऐसा क्यों होता है?" नये विधान मैं भी ईश्वर से यही प्रश्न पूछते हैं इस धरती पर जन्में सबसे बड़े धर्मी व्यक्ति प्रभु येसु। वह इस धरती और आसमान के बिच में क्रूस पर चिल्ला–चिल्ला कर पूछते हैं– "एली! एली, लमा सबक्तनी (हे मेरे ईश्वर! हे मेरे ईश्वर, मुझे क्यों त्याग दिया?)"

परमेश्वर की आज्ञा से येसु ने सबकुछ किया। रोगियों को चंगा किया, दुःखियों को दिलासा दी। वहीं लोग उसे देखकर मुँह फेर लेते हैं, उनके शिष्य भी उन्हें छोड़ देते हैं, वह निराशा में डूबे जा रहे थे। उन्हें लगा कि पिता ईश्वर ने भी उन्हें छोड़ दिया है। फिर भी थोड़े समय मौन रहने के बाद वह कह उठते हैं– "हे पिता! मैं अपनी आत्मा को तेरे हाथों में सौंपता हूँ।"

दुःख और पीड़ा हमारी जिन्दगी का ही अंग है, हमें इसका सामना करना ही है। दुःख और पीड़ा में हमें भी खुद को प्रभु येसु के समान पिता ईश्वर को समर्पित करना हैं।

जब येसु ने क्रूस पर अपना जीवन त्यागा उसी क्षण मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया, धरती काँप उठी.....यह देखकर रोम के सैनिको और अधिकारीयों ने कहा– यह निश्चित ही परमेश्वर का पुत्र है।

जिस तरह मन्दिर का परदा दो टुकड़ों में फट गया उसी तरह क्रूस के नीचे खड़ें सैनिक का दिल भी दो टुकड़ों में फट गया और उसने कहा यह निश्चित ही ईश्वर का पुत्र है।

इस धरती ने मान लिया 'वह ईश्वर का पुत्र है', आसमान ने घोषित किया 'वह ईश्वर का पुत्र है'। क्या हमारा दिल यह मानने को तैयार नहीं? कि वह ईश्वर के पुत्र है और वो मेरे लिये क्रूस पर मर गये।

आईये हम भी अपने दिलों के परदों को हटायें और संत पॉल के साथ कहें– "अब से मैं नहीं मसीह मुझमें जीता है।" दुःख के हर पहर में येसु हमें ईश्वर के पुत्र–पुत्री बनने के लिये निमंत्रण देते हैं। इसलिए जीवन के दुःख को येसु के साथ, येसु के समान सहो और ईश्वर के पुत्र–पुत्री बनों।

Fr. Nithin Francis CMI